National Journal of Advanced Research
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-216X
Received: 13-06-2026, Accepted: 13-07-2026, Published: 28-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 5-7

शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अमित कुमार[1], डॉ. भावना अरोड़ा[2]
[1] शोधकर्ता, (समाजशास्त्र) श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय गजरौला, अमरोहा उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, (समाजशास्त्र) श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का सांस्कृतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना, शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का धार्मिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना तथा माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञान करना।
अनुसंधान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये अनुसंधान हेतु सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया। शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन शोध अध्ययन के लिए चुना गया। प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श चयन के लिए 'रैन्डम पद्धति' को प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में 500 (260 छात्र एवं 240 छात्राऐं) विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में 10 शहरी तथा 10 ग्रामीण कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों से रैण्डम सैम्पिलिंग द्वारा चुना गया। विद्यार्थियों के आंकड़ें एकत्रित करने के लिए स्वयं निर्मित सोशल मीडिया प्रश्नावली को प्रयोग में लाया गया। अध्ययन के परिणाम प्राप्ति हेतु मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' टेस्ट, क्रांतिक अनुपात तथा सह–सम्बन्ध सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया।
शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के सांस्कृतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। अध्ययन से यह पता चलता है कि शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों में श्रेष्ठ हैं। शोध अध्ययन से यह पता चलता है कि शहारी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों में श्रेष्ठ हैं।
शोध अध्ययन द्वारा यह भी पता चलता है कि विद्यार्थियों के सोशल मीडिया के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया।

मूलशब्द: सोशल मीडिया, सांस्कृतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य

प्रस्तावना
संस्कृति मानव के अन्तर्निहित गुणों का व्यवहारिक दर्पण है, जिसमें उसके आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक, नैतिक, भावनात्मक, विकास की गाथा एकत्रित रहती है। संस्कृति में वे सार्वभौमिक, शाश्वत, गुण सन्निहित रहते हैं, जो संपूर्ण मानव–समाज को सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के पथ पर चलने हेतु मार्गदर्शन करते हैं।
किसी भी समाज के विश्वास, आदर्श, सिद्धांत नैतिक नियम, व्यवहार और मानदंड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्व देते हैं और जिनसे उसका व्यवहार निर्देशित एवं नियंत्रित होता है, वह उस समाज एवं उसके व्यक्तियों के मूल्य होते हैं। मूल्यपरक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक मूल्य समाहित हों। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है जिसमें उनका संतुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।
वर्तमान में सोशल मीडिया समाज की मुख्यधारा से अलग जीवन यापन कर रहे उन लोगों की आवाज बनने का भी सशक्त माध्यम बन कर उभरा है, जिनकी आवाज को अब तक दबाया जाता रहा है। सोशल मीडिया व्यवसायियों और उपभोक्ताओं के लिये व्यावसायिक रूप से एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रहा है। वर्तमान सरकारों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से आम जनमानस के बीच विभिन्न विषयों से जुड़ी जानकारी प्रदान कर उनमें जागरूकता फैलाने का कार्य भी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। कई शोधों के माध्यम से सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोजमर्रा की सूचनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं। कुछ असामाजिक और अराजक तत्वों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग फेक न्यूज (झूठी अफवाहें और गलत सूचनाएं) और हेट स्पीच (किसी विशेष समुदाय, धर्म, जाति के विषय में द्वेषपूर्ण बातें फैलाना या अन्य समूहों मे उनके प्रति घृणा पैदा करना) फैलाने में भी किया जाता है। सोशल मीडिया पर निजी जानकारी साझा करने से उससे संबंधित डेटा चोरी होने और उसकी गोपनीयता भंग होने की भी संभावना बनी रहती है। साइबर सुरक्षा मानकों का पालन न करने से सोशल मीडिया पर साइबर अपराधों जैसे– हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा भी बढ़ जाता है।
सोशल मीडिया आज के इंटरनेट युग का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो अपने उपयोगकर्ताओं को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने तथा वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति प्रदान करता है। यह डिजिटल तकनीक तथा वर्चुअल नेटवर्क के माध्यम से अपने उपयोगकर्ताओं के बीच टेक्स्ट और विजुअल सहित विचारों और सूचनाओं को साझा करने की अनुमति प्रदान करता है। सोशल मीडिया मुख्यता उपयोगकर्ता–जनित सामग्री पेश करता है, जो लाइक, टिप्पणी, शेयर, और चर्चा के माध्यम से जुड़ाव प्रदान करता है। वर्तमान में विश्व की लगभग 4.7 बिलियन से अधिक आबादी सोशल मीडिया का उपयोग कर रही है। सोशल मीडिया के अंतर्गत इन्टरनेट फोरम, फोटो शेयरिंग

वीडिओ शेयरिंग, सोशल गेमिंग, सोशल ब्लॉग, वेबलॉग, माइक्रोब्लागिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क, बिजनेस नेटवर्क, वर्चुअल वर्ल्ड, पॉडकास्ट आदि आते हैं। कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे, फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, लिंकडइन, एक्स (पूर्ववर्ती नाम ट्विटर), पिनटेरेस्ट, स्नेपचौट, व्हाट्सप्प आदि से उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएँ भी साझा हो जाती हैं।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वर्तमान समय में सोशल मीडिया का सहारा लेता है परन्तु अन्य विचारधारा के लोगों को अगर यह विचार धारा ठीक नहीं लगती है तब आरोप–प्रत्यारोप प्रारम्भ हो जाते है जो हमारे मध्य सामाजिक विचारधाराओं को समाप्त कर देते हैं। सभी आयुवर्ग के लोग सोशल मीड़िया अधिकतम प्रयोग करते हैं, परन्तु विद्यार्थियों इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर रहे हैं अधिक प्रयोग से उनका व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो रही है। सोशल मीड़िया से अधूरा ज्ञान प्राप्त करके आज के विद्यार्थी अपना नैतिक और चारित्रिक विकास खो चुके हैं। वर्तमान समय में समाज की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक संस्थाओं सहित अन्य महत्वपूर्ण संस्थाएं सोशल मीडिया के के प्रभाव से अछूती नहीं रह गयी हैं। पारिवारिक और सामाजिक संबंध भी सोशल मीडिया से तेजी से प्रभावित हो रहा हैं। वर्तमान पीढ़ी में बच्चे, युवा और बुजुर्ग सोशल मीडिया के तिलिस्मी चक्रव्यूह में फँसते जा रहे हैं। वर्तमान समय में लोग अपना अधिकांश समय सोशल मोडिया प्लेटफॉर्मों पर ही व्यतीत कर रहे हैं। वर्तमान पीढ़ी खासकर बच्चों के विचारों एवं व्यवहार पर सोशल मीडिया का अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ रहा है। सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण उनमें निर्णय लेने की क्षमता में भी बदलाव देखा जा रहा है। बच्चों के समाजीकरण पर सोशल मीडिया का क्या प्रभाव पड़ रहा है? सोशल मीडिया ने बच्चों की भाषा, जीवनशैली और व्यक्तित्व आदि को किस प्रकार प्रभावित किया है? यह इस अध्ययन के विषय की प्रमुख आवश्यकता है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण कदम है। यह अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित साहित्य है, जो कि संवेगात्मक आलोचना के रूप में होना चाहिये। इस प्रकार के सर्वेक्षण से अनुसंधान की पुनरावृत्ति नहीं होगी। इसलिये प्रत्येक शोधकर्त्ता इस कार्य को लगन एवं गम्भीरता से करने का पूरा प्रयास करता है। प्रस्तुत शोध समस्या से सम्बन्धित शोध अध्ययन निम्नलिखित हैं–

मैक्सी बटलर (2018) ने कार्यस्थल प्रशिक्षण पर सूचना एवं संचार तकनीकी का सहायक सामग्री के रूप में उपयोग का अधिगम पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य विभिन्न चरों के सम्बन्ध कार्यस्थल प्रशिक्षण पर सूचना एवं संचार तकनीकी का सहायक सामग्री के रूप में उपयोग का अधिगम पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के परिणाम सकारात्मक पाए गए।

त्यागी, डॉ0 रामदीन (2019) ने अपने शोध पत्र "जनजातीय संस्कृति का नया मंच सोशल मीडिया" में जनजातियों द्वारा सोशल नेटवर्किंग नेटवर्किंग साइट के उपयोग और प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में उन्होंने यह पाया जनजातीय समाज भी सोशल नेटवर्किंग साइट के प्रति उन्नमुख हो रहे हैं। जनजातीय समाज के युवक और युवतियाँ अपनी संस्कृति और संगीत को मोबाईल से रिकार्ड कर अपने मजरे टोले में इन गीतों को अपने सगे संबंधियों को सुना भी रहे हैं कई युवक और युवतियाँ यूट्यूब चौनल पर अपनी आवाज रिकॉर्ड करते देखे जा सकते हैं। कुछ जनजाति युवक–युवतियों मोबाइल के माध्यम से अपनी पढ़ाई भी कर पा रहे हैं। सोशल मीडिया के प्लेटफार्म से तथा सरकारी स्तर से उन्हें रोजगार भी प्राप्त हो रहे हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का सांस्कृतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का धार्मिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनायें को प्रयोग किया गया है–

1. शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का सांस्कृतिक मूल्यों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का धार्मिक मूल्यों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

शोध अधिकल्प

अनुसंधान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये अनुसंधान हेतु सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया। शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन शोध अध्ययन के लिए चुना गया। प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श चयन के लिए 'रैन्डम पद्धति' को प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में 500 (260 छात्र एवं 240 छात्राऐं) विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में 10 शहरी तथा 10 ग्रामीण कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों से रैण्डम सैम्पिलिंग द्वारा चुना गया। विद्यार्थियों के आंकड़ें एकत्रित करने के लिए स्वयं निर्मित सोशल मीडिया प्रश्नावली को प्रयोग में लाया गया। अध्ययन के परिणाम प्राप्ति हेतु मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' टेस्ट, क्रांतिक अनुपात तथा सह–सम्बन्ध सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया।

आंकड़ों का विष्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या–1

शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के सांस्कृतिक मूल्य

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0 / टी–वेल्यू)	सार्थकता का स्तर 0.05
सांस्कृतिक मूल्य	शहरी	250	6.09	1.62	2.26	सार्थक है।
	ग्रामीण	250	5.78	1.42		

उपर्युक्त सारणी के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के नैतिक मूल्य का क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0/टी–वेल्यू) 2.26 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

अतः परिकल्पना कि "शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का सांस्कृतिक मूल्यों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।" अस्वीकृत की जाती है अर्थात शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

सारणी संख्या–2

शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्य

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0/ टी–वेल्यू)	सार्थकता का स्तर 0.05
धार्मिक मूल्य	शहरी	250	6.04	1.71	2.097	सार्थक है।
	ग्रामीण	250	5.73	1.61		

उपर्युक्त सारणी के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्य का क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0/टी–वेल्यू) 2.097 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

अतः परिकल्पना कि शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का धार्मिक मूल्यों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। अस्वीकृत की जाती है अर्थात शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का धार्मिक मूल्यों पर प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

सारणी संख्या–3

विद्यार्थियों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों के मध्य सह–सम्बन्ध

चर	संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक
सांस्कृतिक मूल्य	500	.547
धार्मिक मूल्य	500	सार्थक है।

उपर्युक्त सारणी के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक .547 है। जोकि सार्थक है। अतः परिकल्पना की "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है"। अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष

शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के सांस्कृतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। अध्ययन से यह पता चलता है कि शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों में श्रेष्ठ हैं। शोध अध्ययन से यह पता चलता है कि शहारी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों में श्रेष्ठ हैं।

शोध अध्ययन द्वारा यह भी पता चलता है कि विद्यार्थियों के सोशल मीडिया के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

यह शोध कार्य सम्भल जनपद पर किया गया है। इसे अन्य जनपदों, मण्डलों के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है। शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के शहरी तथा ग्रामीण छात्रों को ही शामिल किया है। यह शोध कार्य अन्य स्तर के विद्यालयों पर भी किया जा सकता है। शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में सांस्कृतिक मूल्यों एवं सोशल मीडिया के धार्मिक मूल्यों को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के अन्य मूल्यों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है। शोधकर्ता ने अपने शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 500 (250 शहरी तथा 250 ग्रामीण) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है। भविष्य में इससे अधिक विद्यार्थियों पर शोध कार्य किया जा सकता है।

संदर्भ

1. त्यागी, आर. (2019), जनजातीय संस्कृति का नया मंच सोशल मीडिया," शोध इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लनरी इन्टरनेशनल जर्नल (इन हिन्दी), अंक 4, क्रमांक 1.
2. सक्सेना, ड़ी. (2018), विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययनरू भोपाल शहर के उपनगर संत हिरदाराम नगर के विद्यार्थियों के विशेष संदर्भ में, शोध इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लनरी इन्टरनेशनल जर्नल (इन हिन्दी), अंक 3, क्रमांक 2.
3. कुशवाहा, आर. एवं गांधी, एस. (2018), सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिकाः एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वॉल्यूम 4, अंक 1, जनवरी 2018, पी.पी. 20–23
4. नागला, बी. के. (2019), भारतीय समाजशास्त्रीय चिन्तन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
5. राय पारस नाथ (1999), अनुसंधान विधियाँ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा।
6. वासनिक, एच. बी. (2020), बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर सोशल मीडिया का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यू एण्ड रिसर्च इन सोशल साइन्सेस, वॉल्यूम 8, नं. 1, पी. पी. 69–73, Retrieved from https://ijrrssonline-in/AbstractView-asp?\ PID=2020-8-1-15
7. त्यागी, आर. (2019), जनजातीय संस्कृति का नया मंच सोशल मीडिया," शोध इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लनरी इन्टरनेशनल जर्नल (इन हिन्दी), अंक 4, क्रमांक 1.?